दिनांक :- 01-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (I) प्रतिष्ठा इतिहास (History Honours)

मानव की बसावट और नवपाषाण काल

नवपाषाण काल में मानव बसावट गंगा यमुना की कछार अर्थात उसके वास स्थल अलग-अलग जिले जैसे, बलिया, मुगलसराय, नालंदा के क्षेत्र आदि मे वास स्थल मिले है। वहाँ फुस की झोपड़ी कच्चे ईंटों के मकान मिले है। इसके अलावह गंगा यमुना के क्षेत्रमेयह कपी होमो हेबलिज या होमो सेपीयन्स जो विकसित मानव अर्थात ज्ञानी मानव के रूप मे देखे गये, इन्होने नई चीजो को विकसित किया जैसे. कुदाल, खंती, नौका दराती, आरा, अनाज फटकने के समान चलनी आदि समान मिले है। इसके अलावह मे तराजु, बटखरा आदि तरह के समान मिले।

इलाहाबाद से चावल नालंदा से गेहूँ आदम गरह बागुर से अन्य तरह की वस्तुएँ जो जीवन यापन में प्राप्त हुई हैं।
इस समय मानव गंगा और यमुना के मैदान एंव सिंधु के कछारी मैदानों में नही बसा था - इस युग में क्रोड़ उपकरणों की प्रधानता थी। कालान्तर में क्रोड़ उपकरणों की प्रधानता धीरे - धीरे कम होती गई एंव शल्क उपकरणों की बढ़ती गयी। यह तकनीकी विकास का द्योतक था। निम्न पुरापाषाण स्थल भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं। इनमें आसाम की घाटी भी सम्मिलत है! एक महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल, सोहन की घाटी, में मिलता है। यह सोहन संस्कृति के नाम से जाना जाता है। सोहन सिंधु नदी की एक सहायक छोटी नदी है! 1928 ई० में डी० एन० वाहिया ने इस क्षेत्र से पूर्व

Scanned with CamScanner

पाषाण काल का उपकरण प्राप्त किया। खोज के क्रम में सिंधु घाटी के पांच स्थलों से अलग अलग पाषाण उपकरण प्राप्त हुए। इसे सोहन उद्योग कहा गया।

सोहन घाटी के उपकरणों का आरंभिक, सोहन, उत्तरकालीन सोहन, चौन्तरा तथा विकसित सोहन नाम दिया गया है। उत्तरकालीन सोहन के अंतर्गत चौन्तरा से प्राप्त उपकरणों का विशेष महत्व है। इन उपकरणों में प्राक सोहन के कुछ फलक, सोहन परम्परा के पेबुल तथा फलक तथा मद्रास परंपरा के हैण्ड एक्स आदि मिलते हैं। ऐसा लगता है कि चौन्तरा उत्तर तथा दक्षिण परंपरा का मिलन स्थल था। निम्नलिखित सोहन के अंतर्गत चौन्तरा से प्राप्त उपकरणों का विशेष महत्व है। निम्नलिखित स्थल निम्न पुरापाषाण से संबंध थे- सोहन नदी घाटी, नर्मदा नदी के किनारे, आंध्र प्रदेश, गिद्दलुर, नेल्लोर, दक्षिण बिहार में सिंहभूम, गुजरात में साबरमती तथा माही घाटियों, उत्तर प्रदेश में बेलनघाटी

महाराष्ट्र में नेवासा आदि।

कई स्थल कश्मीर (पहलगाँव) एवं थार मरुभूमि में भी प्राप्त हुए हैं। किन्तु पुरापाषाण युग के औजार कश्मीर में ज्यादा नहीं मिले हैं क्योंकि हिमानी युग में कश्मीर में अत्यधिक ठंड पड़ती है।

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के पास बेलन घाटी एक महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल था। इसी तरह राजस्थान के मरुभूमि क्षेत्र में डीडवाना, भोपाल के पास भीमबेटका नर्मदा के पास टी. नरसिंहपुर, महाराष्ट्र में प्रवरा नदी के पास नेवासा, जो गोदावरी नदी के पास स्थित है।

गंगा, यमुना एवं सिंधु के कछारी मैदानों में निम्न पुरापाषाणकालिक स्थल नहीं मिले हैं।

इस काल के लोगों ने क्वार्टजाइट पत्थरों का प्रयोग किया था। ये लोग शिकारी एवं खाद्य संग्राहक की श्रेणी में आते हैं। इस काल में बड़े पशुओं का ही शिकार कर सकते थे।

Scanned with CamScanner